शोध सार हिन्दी में Kruti Dev 010 (Font Size 15) एवं अंग्रेजी में Time New Roman (Font Size 12) में टाईप कर MS Word एवं PDF दोनों फार्मेट में ई–मेल **rcsseminar2022@gmail.com** पर प्रेषित करें । शब्द सीमा 300 शब्द।

शोध सार दिनांक 12.09.2022 तक अनिवार्य रूप से प्रेषित करें।

पंजीयन शुल्क

प्रतिभागी	शुल्क
प्राध्यापकों/सहायक प्राध्यापकों के लिए	रु. 500/-
अतिथि प्राध्यापक/शोधार्थी के लिए	रु. 300/-
छात्र–छात्राओं के लिए	रु. 200/-

नोट : प्रतिभागियों को T.A./D.A. का भुगतान नहीं किया जायेगा

Bank Name — **Bank of Maharashtra**
Account Holder Name — **Principal, Seth R.C.S. Arts & Commerce College, Durg**
Account Number — **20105600046**
IFSC Code — **MAHB0000057**

OR Scan QR Code

ऑनलाईन पेमेन्ट करते समय मैसेज बॉक्स में प्रतिभागी अपना नाम अवश्य लिखें।

आयोजन समिति

क्र.	सदस्यों के नाम	मोबाइल नंबर
1	डॉ. श्रीमती किरण तिवारी	7987317619
2	डॉ. ए.के. पाण्डेय	7987254066
3	डॉ. अजय लांजेवार	9893518360
4	श्री नीलेश तिवारी	9826249236
5	डॉ. प्रमोद तिवारी	9826208979
6	श्रीमती निधि मिश्रा	9827476169
7	डॉ. प्रमोद यादव	9425211987
8	डॉ. आयशा अहमद	9827613904
9	श्री मनोज कुशवाहा	8817355688
10	डॉ. भावना वर्मा	9993894930
11	डॉ. पूजा मल्होत्रा	9301402000
12	डॉ. रानी शुक्ला	9329448271
13	श्री एस.एस. ठाकुर	9893294366
14	श्री राकेश दिवाकर	9425245425
15	श्री युगेश देशमुख	9752678070
16	कु. फरहा परवीन सिद्दकी	8349727063
17	श्रीमती प्राची उके	7987242157
18	कु.भावना यादव	9826754902
19	पवनदीप कौर	7999006391
20	श्री पंकज यादव	7415865235
21	श्री भागवत देवांगन	7000436676

✣✣✣

सदगुरु की अनंत महिमा, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार ॥

बुंद समाना समुंद में, जानत है सब कोय।
समुंद समाना बुंद में, जाने बिरला कोय ॥

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

आयोजक

हिन्दी एवं समाजशास्त्र विभाग

सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
के संयुक्त तत्वावधान में

संत कबीर : जीवन मूल्य एवं समाज दर्शन

दिनांक 28 एवं 29 सितंबर 2022

श्री प्रवीण चन्द्र तिवारी
संरक्षक
अध्यक्ष जिला शिक्षण समिति
दुर्ग

डॉ. गजानंद कटहरे
प्राचार्य
सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणि.
महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

– परामर्शदाता –
योगाचार्य मंगलदास मंगलम
कबीर दर्शन चिंतक
मो.नं 9425555473

– संयोजक –

डॉ. दुर्गा शुक्ला
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
मो.नं. 9302158450

डॉ. उमेश वैद्य
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
मो.नं. 9755888795

महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

जिला शिक्षण समिति दुर्ग द्वारा संचालित सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना जुलाई 1964 में की गई। यह महाविद्यालय, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग द्वारा संबंद्ध एवं यूजीसी द्वारा 2 (f) and 12(b) के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है। महाविद्यालय द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कला, वाणिज्य, शारीरिक शिक्षा, ग्रंथालय विज्ञान, पीजीडीसीए संकायों का संचालन किया जाता है । इस्पात नगरी भिलाई और दुर्ग जिले में यह महाविद्यालय अपनी श्रेष्ठता के लिए जाना जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य की संस्कारधानी और शैक्षणिक गतिविधियों का केन्द्र कहलाने वाले भिलाई–दुर्ग शहर, मुंबई–हावड़ा रेलमार्ग पर स्थित है, जो नागपुर से 260 कि.मी. एवं राजधानी रायपुर से 40 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। राज्य का मुख्य एयरपोर्ट रायपुर लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर है। दुर्ग बस स्टैंड से 500 मी. एवं रेल्वे स्टेशन से मात्र 2 कि.मी. पर स्थित है।

संगोष्ठी का उद्देश्य – मानव की मानवता को जागृत करके, उसके जीवन को सार्थक, सुखद व सफल बनाने का कारक परिवार, गुरुजन समाज और साहित्य है। इनमें से साहित्य जीवन और जगत का शाश्वत प्रकाश स्तंभ है। भारतवर्ष में संस्कृत के बाद हिन्दी–साहित्य ही इतना समृद्ध है कि हमारे जीवन को मूल्यों से अलंकृत करता है। समाज में समता, समरसता का संचार करने में सक्षम है। और बात जब कबीर की हो तो हिन्दी साहित्य अपने स्वर्णकाल के इस अद्वितीय, आत्मदर्शी संत कवि की आंखन–देखी, स्वयं–सिद्ध, सहज–सरल, निष्पक्ष वाणियों से, स्वर्णिम भारत का स्वप्न देखता है। अस्तु, यह राष्ट्रीय संगोष्ठी, संत कबीर के साथ देश दुनिया की ज्वलंत समस्याओं से समाधान, सामाजिक समता, समरसता पर विमर्श है और उससे भी अधिक हमारे जीवन मूल्यों के प्रति सजगता व निष्ठा का विकास करने का सनम्र प्रयास है। यह प्रयास स्वयं के लिए, समाज के लिए, भावी पीढी के लिए है। आपके सहयोग से हम अवश्य सफल होंगें।

सह विषय :

1. कबीर साहित्य में नैतिक मूल्य
2. वज्रादपि कठोर कुसुमादपि कोमल–कबीर
3. कबीर का जीवन–दर्शन
4. सतगुरु की अनंत महिमा : कबीर
5. वाणी का डिक्टेटर : कबीर
6. "महान जन–संचारक" कबीर की शक्ति
7. समाज का परम हितैषी कबीर
8. वसुधैव कुटुम्बकम् और कबीर
9. कबीर की देशना का केन्द्र – "मानव"
10. कबीर के "मानव" की खोज
11. संत कबीर से संबंधित अन्य विषय

उद्घाटन सत्र

दिनांक– 28 सितंबर 2022, समय– 10:30 से 12:30

मुख्य अतिथि – **आदरणीया डॉ. अरुणा पल्टा**
माननीय कुलपति,
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

मुख्य वक्ता – **डॉ. निभा एस. उपाध्याय**
विभागाध्यक्ष हिन्दी,
आर.डी.जी. महिला महाविद्यालय
अकोला (महाराष्ट्र)

अध्यक्षता – **आचार्यश्री महेशचंद्र शर्मा**
पूर्व प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, उतई
जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्रश्नोत्तरी समय – 12:30 से 1:30

द्वितीय सत्र

समय– 2:30से 4:00

मुख्य वक्ता – **आचार्यश्री बालचंद कछवाहा**
पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी,
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्षता – **डॉ. रंजना शर्मा**
विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

प्रश्नोत्तरी समय – 4:00 से 4:30

हंसा तू सुवर्ण वर्ण, क्या वर्णों मैं तोहि।
तरिवर पाय पहेलिहो, तबै सराहौं तोहि ॥

मानुष तेरा गुण बडा, साँस न आवै काज।
हाड न होवै आभरण, त्वचा न बाजन बाज ॥

जब तुम आए संसार में, जग हँसे तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोय ॥

तृतीय सत्र

दिनांक 29 सितंबर 2022, समय– 10:30 से 12:30

मुख्य वक्ता – **प्रोफेसर सी.एस.एस. ठाकुर**
पूर्व विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
– **डॉ. एल.एस. गजपाल** एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्षता – **डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव**
छात्र अधिष्ठाता,
हेमचंद यादव वि.वि.दुर्ग(छ.ग.)

प्रश्नोत्तरी समय – 12:30 से 1:30

समापन सत्र

समय – 2:30 बजे से

मुख्य अतिथि – **आदरणीय श्री ताम्रध्वज साहू जी**
माननीय गृहमंत्री, छ.ग.शासन, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्षता – **श्री प्रवीण चन्द्र तिवारी**
अध्यक्ष, जिला शिक्षण समिति, दुर्ग (छ.ग.)

विशिष्ट अतिथि – **प्रोफेसर सी.एस.एस. ठाकुर**
पूर्व विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

✣✣✣

कबीर एक न जांणियाँ, तो बहु जांण्यां क्या होइ।
एक तैं सब होत है, सब तैं एक न होई ॥

कबीर खडे बाजार में, सबकी माँगे खैर।
ना काहू से दोसती, ना काहू से बैर ॥

सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय ॥